मनुष्य को सिर्फ दो महान आध्यात्मिक चीजों की आवश्यकता होती है। पहला, दूसरों की गलतियों को भूलना और दूसरा, अपने अन्दर अच्छाई लाना।
–अज्ञात।

मंकी पॉक्स एक नई चुनौती

यह भी कहा जा रहा है कि चूंकि स्मॉल पॉक्स का उन्मूलन हो जाने के बाद अब उसके टीके का इस्तेमाल नहीं होता है, इसलिए संभव है कि इस वायरस के लिए तेजी से फैलना पहले के मुकाबले आसान हो गया हो।

राधा वर्मा।।

पहले महामारी और फिर युद्ध से उपजे मुश्किलात झेलती दुनिया के सामने मंकी पॉक्स के रूप में एक नई चुनौती आ गई है। विभिन्न देशों में इसके सौ से ज्यादा मामलों की पुष्टि होने के बाद इसे गंभीरता से लिया जा रहा है। एक सप्ताह पहले तक इसके मामले इतने कम थे कि इसे किसी तरह का खतरा नहीं माना जा रहा था। मगर पिछले कुछ ही दिनों में ब्रिटेन के साथ–साथ अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और बेल्जियम सहित 12 देशों में इसके मरीज पाए जाने की पुष्टि हो गई। यही नहीं, वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन ने कहा है कि कुछ दिनों में इसके और भी मामले सामने आ सकते हैं। हालांकि यह कोई नई बीमारी नहीं है। अफ्रीकी देशों में इसके हजारों मामले हर साल सामने आते हैं। लेकिन यह पहला मौका है जब अफ्रीका से बाहर इतने बड़े इलाके में इसका प्रसार देखा जा रहा है। इतने बड़े पैमाने पर संक्रमण का मतलब है कि यह पिछले कुछ समय से फैल रहा होगा जिस पर किसी का ध्यान नहीं गया। राहत की बात यह है कि अभी तक इन देशों में इस संक्रमण से किसी की मौत होने की खबर नहीं है। अफ्रीकी देशों के जिन इलाकों में यह बीमारी आम रही है वहां भी ज्यादातर लोग ठीक हो जाते हैं। औसतन दस मामलों में एक मौत देखी जाती है। मगर स्मॉल पॉक्स परिवार के इस वायरस का अचानक विभिन्न महादेशों में फैलाव कैसे हो गया यह गुत्थी वैज्ञानिकों को परेशान कर रही है। इसका कोई ठोस जवाब नहीं मिल पाया है। लेकिन इस आशंका को खारिज नहीं किया जा सकता कि कहीं इस वायरस ने अपना रूप तो नहीं बदला है। अगर ऐसा हुआ होगा तो नए वेरिएंट के रूप में इसके लक्षण, संक्रमण की क्षमता वगैरह में भी परिवर्तन संभव है।

ब्रिटेन के स्वास्थ्य अधिकारी इस संभावना का पता लगा रहे हैं कि क्या सेक्स के जरिए भी इसका संक्रमण होता है? यह भी कहा जा रहा है कि चूंकि स्मॉल पॉक्स का उन्मूलन हो जाने के बाद अब उसके टीके का इस्तेमाल नहीं होता है, इसलिए संभव है कि इस वायरस के लिए तेजी से फैलना पहले के मुकाबले आसान हो गया हो। इन तमाम आशंकाओं के बीच भी घबराहट की स्थिति न बने इसके लिए यह ध्यान में रखना जरूरी है कि अभी भी मंकी पॉक्स संक्रमण के मामले बहुत कम हैं और इनके आम लोगों के बीच फैलने की गुंजाइश भी कम ही बताई जाती है। लेकिन एक बात तो यह कि ब्रिटेन में कम्युनिटी स्प्रेड शुरू हो चुका है यानी ऐसे केस सामने आ रहे हैं जिनमें संक्रमित व्यक्ति के अफ्रीकी देशों से आने वाले किसी शख्स के साथ संपर्क में आने की कोई बात नहीं है। दूसरे, इस वायरस के बारे में अब भी ज्यादा कुछ मालूम नहीं है। इसलिए किसी भी सूरत में सावधानी नहीं छोड़ी जा सकती।

सजा और सीख

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

मन में जब चिंताओं का कूड़ा और बुरे संस्कारों का कचरा भरा है, तब तक उपदेशामृत पान करना है तो सबसे पहले अपने मन को शुद्ध करना चाहिए, कुसंस्कारों का त्याग करना चाहिए, तभी सच्चे सुख और आनंद की प्राप्ति होगी।

एक बार एक राजा था जो किसी भी बात पर गुस्सा हो जाता था और बिना सोचे–समझे कोई भी सजा सुना देता था। एक बार उसे अपने महामंत्री पर गुस्सा आ गया और राजा ने उसे रातभर ठंडे पानी में खड़े रहने की सजा सुना दी। अगले दिन जब महामंत्री राजा के सामने पहुंचा तो उसके चेहरे पर मुस्कान थी। राजा यह देखकर हैरान रह गया। उसने महामंत्री से पूछा कि तुम इतने शांत और खुश कैसे हो? क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा?

संपादकीय

खुदकुशी का साधन

एक बात और है। ज्यादातर लोग खुद को गोली मारकर आत्महत्या करने लगे हैं। गोली मारना ज्यादा कारगर होता है बनिस्बत इस बात के कि कोई ज्यादा दवाई फांक ले या जहर खा ले। तो जो बंदूक अपनी और अपनी संपत्ति की सुरक्षा के लिए नागरिक का हक बनी, उससे लोग न केवल छोटे–छोटे स्कूली बच्चों को बल्कि खुद अपने आप को भी मार रहे हैं। लेकिन दूसरों का भय दिखाकर जो कंपनियां भारी मुनाफे पर बंदूक बेच रही हैं, वे क्यों मानेंगी? अमेरिका में जब सेना और पुलिस रखने का चलन नहीं था, तब मिलिशिया का इस्तेमाल लड़ाइयों में होता था जो अपने–अपने राज्यों और समुदायों की हिफाजत के लिए लड़ते थे। उसी मिलिशिया का वास्ता देकर अब नागरिकों के नए–नए हथियारों के साथ घर से बाहर निकलने के तर्क गढ़ लिए गए हैं। सवाल है कि जब हर राज्य के पास कानून और व्यवस्था को कायम रखने के लिए पुलिस आदि की व्यवस्था है तो नागरिकों को हथियारों से लैस रखने की जरूरत ही कहां है? किसी 18 साल के बालिग को सीधे दुकान पर जाकर दो–दो अर्द्ध स्वचालित हथियार खरीदने की सुविधा क्यों होनी चाहिए? अमेरिका की समस्या सचमुच विकट है जहां भय और हिंसा का माहौल अपने उत्कर्ष पर है और लोग इस कदर डरे हुए हैं कि बंदूक रखना उनके स्वभाव और संस्कृति का जरूरी हिस्सा बन गया है।

ज्यादातर रिपब्लिकन सांसद 'हथियार रखने के इस नागरिक अधिकार' से कोई छेड़छाड़ बर्दाश्त करने को तैयार नहीं होते। यही वजह है कि इस वारदात के बाद राष्ट्र के नाम अपने संदेश में राष्ट्रपति बाइडन असहाय से लगे।

गन लॉबी का दबदबा

मधुसूदन आनन्द।।

अमेरिका के टेक्सस राज्य में 18 साल के एक युवक ने एक स्कूल में अंधाधुंध गोलियां चलाकर 19 छोटे–छोटे बच्चों और उनके 2 अध्यापकों को मौत के घाट उतार दिया। वह पहले अपने घर में दादी को गोली मारकर आया था। फिर इस प्राथमिक स्कूल में घुसकर 19 मासूम बच्चों और उन्हें बचाने लिए आगे बढ़े 2 टीचरों को ए. आर. 15 जैसी अर्द्ध स्वचालित रायफल से भून डाला। संयोग से उसकी दादी तो बच गई लेकिन कुल 21 लोग बेबात मारे गए। इस युवक ने, जिसका नाम साल्वाडोर रामोस बताया गया था, हाल ही में अपना जन्मदिन मनाने से पहले दो रायफलें खरीदी थीं। हमले से कुछ ही मिनट पहले उसने फेसबुक पर लिखा था कि वह एक स्कूल में हमला करने जा रहा है और अपनी दादी को तो मार भी चुका है।

अमेरिका में इस तरह की नृशंस हत्या की घटनाएं इधर बढ़ती ही जा रही हैं। ऐसे क्रूर हत्यारे बच्चों के स्कूलों, चर्चों और बड़े–बड़े स्टोरों में बिना किसी कारण लोगों को एक साथ मारने का काम करते हैं। ऐसे लोग न तो कोई मानसिक रोगी होते हैं और न ही हिंसक अपराधी। सवाल यह है कि उनमें ऐसा क्या गुस्सा या जुनून है, जिसके कारण वे सामूहिक गोलीबारी करके लोगों को मारते हैं। इसका

एक ही उत्तर है कि अमेरिका बंदूक की संस्कृति से बुरी तरह परेशान है। वहां बंदूकें और पिस्तौलें बनानेवालों की ऐसी जबरदस्त और प्रभावशाली लॉबी है जो सरकार और संसद की चलने ही नहीं देती। अमेरिकी घरों में नागरिकों के पास करीब 40 करोड़ बंदूकें हैं। पारिवारिक रूप से भावनात्मक कमी, होड़ में पिछड़ने का एहसास या फिर अकेलेपन का डर किसी किशोर पर हावी हो जाता है तो वह अचानक एक जुनून का शिकार होकर अपने तईं समाज से बदला लेने के लिए उठ खड़ा होता है और इसके लिए सॉफ्ट टारगेट चुनता है।

अगर हम सपनों का देश कहे जाने वाले अमेरिका के इतिहास पर नजर डालें तो पाएंगे कि यह गृहयुद्धों और युद्धों के सतत खूनखराबे के बाद ही अस्तित्व में आया है। वहां बेइंतहा जमीन थी और कृषि जीविका का सबसे बड़ा साधन था। इसलिए पहले जमीन खरीदना और फिर अपनी और अपनी संपत्ति की हिफाजत करना अमेरिकियों के खून में है। यही कारण है कि जब संविधान लागू करने की बात उठी तो अनेक राज्यों ने शर्त रखी कि इसमें नागरिक के अधिकार संबंधी बिल का समावेश किया जाए।

ऐसा नहीं कि सभी अमेरिकी हथियार रखने के पक्ष में हैं। ज्यादातर रिपब्लिकन सांसद 'हथियार रखने के इस नागरिक अधिकार' से कोई छेड़छाड़ बर्दाश्त करने को तैयार नहीं होते। यही वजह है कि इस वारदात के बाद राष्ट्र के नाम अपने संदेश में राष्ट्रपति बाइडन असहाय से लगे। वे इतना ही कह पाए कि देश के लोग आगे आकर अमेरिकी संसद पर इतना दबाव डालें कि वह गन संबंधी कानूनों को कड़ा बनाए। उन्होंने भी इशारे से रिपब्लिकन पार्टी को इसके लिए जिम्मेदार ठहराया। यानी बंदूक की अपसंस्कृति तो है ही, राजनीति का भी इसमें हाथ है। जब तक राजनीतिक सर्वानुमति नहीं बनेगी बंदूक के निर्बाध व्यापार का नियमन और नियंत्रण भी नहीं हो पाएगा। वैसे कुछ ऐसे राज्य हैं जहां बंदूक और गोली–बारूद के व्यापार का कुछ नियमन किया गया है। ये ऐसे राज्य हैं जहां निर्बाध रूप से बंदूक खरीदने बेचने वाले राज्यों की तुलना में बंदूकों से मरने वाले लोगों की संख्या कम है। ऐसे राज्यों में कैलिफोर्निया और हवाई शामिल हैं।

अष्टयोग-5049

	3		4	5		
2	30	7	31		34	2
1			3		7	
	28	6	31	6	39	3
4		1			5	7
3	30		32	7	34	
	5		6		2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5048 का हल

2	3	6	4	1	7	5
7	30	2	25	2	34	4
4	5	1	3	6	7	2
6	28	5	35	3	39	6
1	2	4	6	7	5	3
5	30	3	42	5	34	7
3	5	7	6	4	2	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

बुनियादी अधिकारों से वंचित

मोहन। लोगों को आशंका थी कि अगर कभी केंद्र में बहुत मजबूत सरकार बनी तो वह लोगों को उन बुनियादी अधिकारों से वंचित कर सकती है, जिनकी राज्यों के संविधान में गारंटी दी गई है। इसलिए संविधान में दूसरा संशोधन करके यह सुनिश्चित किया गया कि लोगों के पास हथियार रखने का अधिकार बने रहना चाहिए। इससे अमेरिका में बंदूकें बनाने वालों की बन आई। आज स्थिति यह है कि हर 100 आदमियों पर 120.5 आग्नेयास्त्र हैं। मां–बाप इन हथियारों को बच्चों की पहुंच से दूर रखने में प्रायः विफल रहे हैं। इस साल अब तक कुल 149 दिनों में 212 सामूहिक नरसंहार हो चुके हैं। लेकिन गन–लॉबी इतनी तगड़ी और असरदार है कि सरकार कुछ नहीं कर पाती। रिपब्लिकन पार्टी के लोगों पर इस लॉबी का बहुत दबदबा है। संसद के उच्च सदन सीनेट में हर राज्य के दो–दो प्रतिनिधि होते हैं, राज्य चाहे कितना भी बड़ा या छोटा हो।